उद्यान / बागवानी के प्रकार :-

उद्यान विज्ञान के निम्नलिखित प्रकार हैं।

i) फल विज्ञान :- इस विभाग के अंतर्गत फलों के उत्पादन में आवश्यक कृषि क्रियाओं या उद्यानिकी क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है इस विभाग को फल विज्ञान, फल उद्यानिकी या फलों की बागवानी या फलों उत्पादन भी कहा जाता है। ऐसे स्थानों को जहाँ पर फलों के वृद्ध योजना के अनुसार विशेष उद्देश्य से लगाये जाते हैं, फलोद्यान या फलबाग या फलों का बगीचा कहलाते हैं फल की खेती करने वाले को फलोत्पादक कहते हैं। उपयोगी फलों के गुण तथा उपयोगिता और फल वृक्षों के वृद्धि फलने की प्रकृति या स्वभाव का अध्ययन इस विभाग के अंतर्गत किया जाता है फल वृक्षों से भरपूर उत्पादन प्राप्त करने हेतु आवश्यक तकनीक जैसे- उचित जलवायु तथा भूमि का चुनाव, उन्नतिशील किस्मों का चुनाव प्रवर्धन की विधियाँ, वृक्षारोपण, सिंचाई, खाद एवं उर्वरक की मात्रा एवं देने का समय, कटाई - छटाई एवं संधाई के सामान्य नियम का ज्ञान इसी विभाग से प्राप्त होता है। उपर्युक्त तकनीक को एक निश्चित योजना के अनुसार अपनाना चाहिए। अतः फलोद्यान का विन्यास, स्थापना एवं प्रबन्ध भी इस विभाग के विषय हैं। फलोत्पादन में समय-समय आने वाली समस्याओं, जैसे- जैसे रोग और कीट का आक्रमण, प्रतिकूल वायुमंडलीय वातावरण आदि तथा उनका निराकरण भी फल विज्ञान का विषय है। इस विषय के विशेषज्ञ को फल-विशेषज्ञ या फल वैज्ञानिक या पामालॉजिस्ट कहते हैं।

ii) पुष्प विज्ञान :- इस विभाग के अंतर्गत शोभायमान पौधे तथा वृक्षों के उगाने में आवश्यक कृषि क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है

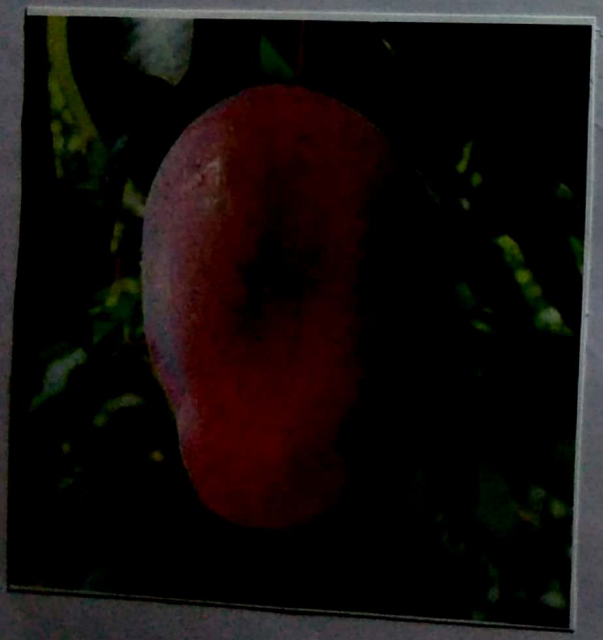

Scanned with CamScanner

इसे शोभायमान उद्यानिकी या अलंकृत उद्यानिकी या अलंकृत बागवानी या दृश्य - भू - बागवानी आदि नामों से जाना जाता है। ऐसे स्थानों पर जहाँ कि भूमि में सुन्दर पौधों तथा वृक्षों को लगाकर अलंकृत किया जा सकता है, शोभा उद्यान या अलंकृत उद्यान पुष्पोद्यान पार्क, वाटिका या कुंज कहा जाता है। प्रकृति के मनोरम दृश्यों का अनुकरण करना ही इस विभाग का प्रमुख लक्ष्य है। अतः सुन्दरता प्रदान करने की दृष्टि से पुष्पीय पौधों, झाड़ियों, लताओं तथा वृक्षों का अध्ययन किया जाता है। ऐसी तकनीक जो इनके विकास में आवश्यक है, जैसे - पौधा रोपण, पौधा प्रवर्धन, कटाई - छंटाई एवं उचित संधाई, पौधों का चुनाव आदि इसी विभाग के विषय हैं। स्वस्थ, मनोरंजन उपलब्ध हो इस दृष्टिकोण से किसी भी स्थान को योजनाबद्ध तरीके से सजाने या संवारने के लिए योजना और विन्यास अनिवार्य अंग है। विन्यास करने के कुछ आधारभूत नियम होते हैं जिनका अध्ययन इस विभाग में प्रमुखता से किया जाता है। कृत्रिम फुहारे जलप्रपात जल उद्यान, जलाशय, शैल उद्यान, पौदियाँ, वृक्षावली, छायादार स्थल, सुन्दर मौसमी पुष्पों एवं झाड़ियों की पट्टियाँ हरियाली आदि कार्यों को करने की कला एवं तकनीक, पुष्प विज्ञान के अन्तर्गत ज्ञात की जा सकती है इस विषय के ज्ञाता को पुष्प विशेषज्ञ या फ्लोरिकल्चरिस्ट कहते हैं।

3.) सब्जी विज्ञान :

इस विभाग के अंतर्गत साग - सब्जी उगाने से संबंधित समस्त कृषि क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है इसे सब्जी उत्पादन या सब्जी उगाना भी कहते हैं। ऐसे स्थानों पर जहाँ कि सब्जियाँ उगाई जाती हैं, सब्जी क्षेत्र या कछवारा कहलाता है। सब्जियाँ आर्थिक दृष्टिकोण को लेकर उगायी जाती हैं, अतः उनके गुणात्मक और भरपूर उत्पादन प्राप्त करने की तकनीक एवं आवश्यकताओं का अध्ययन इसी विभाग के अंतर्गत आता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

भूमि एवं जलवायु के अनुसार उन्नतिशील किस्मों का चुनाव, पौधा तैयार करना, रोपण या बोना, उचित समय और मात्रा में खाद, उर्वरक और सिंचाई देना, उचित फसल-चक्र अपनाना तथा अन्य क्रियाएँ भी इन विभाग के विषय है। सब्जी उत्पादन में रोग एवं कीट के आक्रमण तथा उत्पादित सब्जियों के विक्रय की समस्या होती है, इनका हल भी इसी विभाग के अध्ययन से प्राप्त होता है स्वयं के उपयोग के लिए गृह वाटिका मे सब्जियों उगाने की कला एवं तकनीक भी सब्जी विभाग से ही प्राप्त होती है। इस विषय के विशेषज्ञ या ओलेरिकल्चरिस्ट कहते है।

4.) फल परीक्षण :-

इस विभाग के अंतर्गत फल एवं सब्जियों को खराब न होने देने तथा उनसे विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ तैयार करने के सिद्धांतो एवं विधियों का अध्ययन किया जाता है इस विषय को प्रौद्योगिकी तथा फल संसाधन भी कहते है। फल एवं सब्जियों का परीक्षण एक निश्चित वातावरण मे विशिष्ट तकनीकी क्रियाओं द्वारा किया जाता है। इसके लिए कृत्रिम रूप से स्थल का निर्माण किया जाता है। जिसे फल परीक्षण केन्द्र, फल उद्योगशाला, कैनिंग फैक्टरी संसाधन इकाई कहा जाता है। ऐसे स्थानों द्वारा निर्मित पदार्थों को परिरक्षित पदार्थ या संसाधित पदार्थ कहते है। फल एवं सब्जियाँ क्यों खराब होती है? कौन से कारण उत्तरदायी है? उनसे बचाव के लिए कौन से उपाय अपनाये जाने चाहिए? उपर्युक्त समस्याओं एवं उनके निराकरण का अध्ययन इसी विभाग के अंतर्गत किया जाता है एव इस विभाग को वर्तमान मे एक उद्योग के रूप मे विकसित किया गया है, इसलिए इसे औद्योगिक-विज्ञान भी कहते है। इस विषय के विशेषज्ञ को फल प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ या फ्रूट टेक्नोलॉजिस्ट कहते है।

Scanned with CamScanner